Rahul Goyal_PAPER-2 (UNIT-4, 5, 6) 17-02-2022

10 April 2022 02:30

Rahul Goyal_PAP...

नाम - राहुल गोयल
प्रश्नपत्र - द्वितीय (इकाई - 4, 5, 6)
दिनांक - 17-02-22

97½ / 150

1 A ASEAN - एसोसिएशन ऑफ साउथ ईस्ट एशियन नेशन्स
स्थापना वर्ष - 8 अगस्त 1967 (वर्तमान सदस्य राष्ट्र - 10)
उद्देश्य - सदस्य देशों के बीच राजनीतिक स्थिरता व विकास करना। 2½

1 B सार्क - दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन
स्थापना - 8 दिसम्बर 1985 (सदस्य राष्ट्र - 8)
उद्देश्य - शांति, विकास, गरीबी उन्मूलन, क्षेत्रीय विवाद सुलझाना 2½

1 C (1) मुद्रा का निर्गमन एवं मुद्रा भण्डारण का प्रबंधन
(2) सरकार, बैंक व अन्य वित्तीय संस्थाओं के बैंकर का कार्य
(3) मुद्रा बाजार व विदेशी विनिमय बाजार का नियमन। 2

1 D वित्तीय समावेशन कम आय वाले लोगों और समाज के वंचित वर्ग को वहनीय कीमत पर भुगतान, बचत, क्रेडिट आदि सभी वित्तीय सेवायें पहुंचाने का प्रयास है। 2

1 5 सांविधिक तरलता अनुपात (SLR) में बैंकों को अपने एनडीटीएल का एक निश्चित भाग सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करना अनिवार्य होता है। 2

1 6 वह कर जिसका कराघात और करापात एक ही व्यक्ति वहन करे, प्रत्यक्ष कर कहलाते हैं, जैसे- आयकर आदि। 2

1 7 त्रुटिय सिद्धान्त के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में संसाधनों का इष्टतम अथ उपयोग किया जाता है ...

1 7 चक्रीय सिद्धान्त के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में संसाधनो का इष्टतम उपयोग किया जाता है अर्थात कम इनपुट में अधिकतम लाभ प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

1 8 न्यासिता के सिद्धान्त के अनुसार पूंजीपतियों को अपनी आवश्यकता पूर्ति के बाद शेषराशि एक ट्रस्टी की हैसियत से देखभाल कर समाज कल्याण पर खर्च करना चाहिए।

1 9 'द प्रॉब्लम ऑफ इंडियन रूपी' के लेखक डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी हैं।

1 10 कौटिल्य की प्रसिद्ध पुस्तक "अर्थशास्त्र" है, जिसमें राजनीतिक सिद्धान्त दिये गये हैं।

1 11 संपूर्ण क्रांति का सिद्धान्त लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने दिया है। जिसका उद्देश्य शासन के साथ व्यक्ति भी परिवर्तन (सुधार) लाना है।

1 12 गुलिक के अनुसार "लोकप्रशासन विज्ञान का वह भाग है जिसका सरकार से सम्बंध है, मुख्यता इसकी कार्यकारिणी शाखा से।"

1 13 निजी क्षेत्र में व्यावसायिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए की जाने वाली समस्त क्रियाऐं निजी प्रशासन कहलाती हैं।

1 14 लोक प्रशासन में नव लोकप्रशासन से आशय है कि विषयगत अध्ययन में नवाचार एवं विकास को दृष्टिगत रखा जाये।

1 15 अमेरिकी लोकप्रशासन सोसायटी ने पो...

1 15 अमेरिकी लोकप्रशासन सोसायटी ने प्रो. जॉन सी हनी की अध्यक्षता में 1966 में लोकप्रशासन को स्वतंत्र विषय बनाने पर शोध कार्य निष्पादित किया।

1967

1½

2 1 नेहरू एक राजनीतिज्ञ थे, लेकिन नैतिक आदर्शवाद में उनकी गहन आस्था जीवन भर रही। पीड़ित और शोषित लोगों के प्रति उनके हृदय अगाध सहानुभूति थी। उनका संदेश था कि व्यक्ति को व्यावहारिक और अनुभव प्रधान, नैतिक, सामाजिक, परोपकारी और मानवतावादी होना चाहिए। वे लोकतान्त्रिक समाजवादी थे। उन्होंने साधनों के न्यायपूर्ण वितरण पर बल दिया जिससे अधिकतम मानवकल्याण हो सके।

3½

2 2 गांधी जी औद्योगिकीकरण का विरोध करते थे क्योंकि इससे बड़े बाजार की आवश्यकता जन्म लेती है। पूँजीपति वर्ग संसाधनों पर काबिज हो जाता है जिससे उपनिवेशवाद को बढ़ावा मिलता है और इससे आर्थिक विषमता पनपती है, मानव श्रम का महत्व कम होता है

8

...बढ़ावा मिलता है और इससे आर्थिक विषमता पनपती है, मानव श्रम का महत्व कम होता है और गरीबी बढ़ने लगती है। इसे ही गांधी जी ने व्यवसायिक हिंसा कहा है और कुटीर, स्वदेशी, छोटे उद्योगो को बढ़ावा दिया जिसे उन्होंने व्यवसायिक अहिंसा कहा है।

2 3 लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया जिसके तहत उन्होंने सप्त क्रांति प्रतिपादित की –

1. सामाजिक क्रांति – सामाजिक बुराइयों की समाप्ति।
2. आर्थिक क्रांति – विकेन्द्रीकरण से आर्थिक विषमता का अंत।
3. सांस्कृतिक क्रांति – सांस्कृतिक मूल्य व परंपरायें पुनः प्रतिष्ठित।
4. राजनीतिक क्रांति – विकेन्द्रीकृत व्यवस्था, अधिकतम जन सहभागिता।
5. शैक्षणिक क्रांति – स्वावलंबी व रोजगार मूलक शिक्षा।
6. आध्यात्मिक क्रांति – आध्यात्मिक विकास व नैतिकता पर बल।
7. बौद्धिक क्रांति – विचारों मे परिवर्तन व मूल्यों में समन्वय।

1 4 डॉ. अम्बेडकर दलितोद्धार के लिए राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति को सबसे महत्वपूर्ण मानते थे, इसलिए वे दलितो के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र की मांग करते थे, इसके लिए उन्होंने तीनो गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। अन्ततः उन्हें पूना समझौता में आरक्षित सीटो से संतोष करना पड़ा। उन्होंने दलितों को सार्वजनिक स्थलों जैसे तालाब, मंदिर आदि में प्रवेश दिलाने सत्याग्रह किये, समाचार पत्र पत्रिकाएं जैसे बहिष्कृत भारत, मूकनायक निकाले और 1925 में बहिष्कृत हितकारिणी सभा बनायी।

1 5 लौह इस्पात उद्योग किसी भी देश की आर्थिक विकास की धुरी होती है। भारत मे लौह इस्पात उद्योग का विवरण निम्न है-

स्वतंत्रता पूर्व स्थापित	स्वतंत्रता पश्चात स्थापित

स्वतंत्रता पूर्व स्थापित	स्वतंत्रता पश्चात स्थापित
• 1830 मे पार्टोनोवा मे (असफल)	• द्वितीय पंचवर्षीय योजना में स्थापित – भिलाई, राउरकेला, दुर्गापुर
• 1874 मे कुल्टी में (सफल)	• बोकारो स्टील प्लान्ट (झारखण्ड)
• TISCO (1907), जमशेदपुर	• सलेम स्टील प्लान्ट (तमिलनाडु)
• हीरापुर (1918)	• विजय नगर स्टील प्लान्ट (कर्नाटक)
• भद्रावती स्टील प्लान्ट	• विशाखा पट्टनम स्टील प्लान्ट
• बर्नपुर स्टील प्लान्ट	

3½

1 6 लोक वितरण प्रणाली लोगों तक खाद्यान्न पहुंच सुनिश्चित करने के लिए एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा उचित मूल्य व पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न एवं अन्य आवश्यक वस्तुऐं उपलब्ध करा कर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। इससे बाजार में वस्तुओं की कीमतों को भी नियन्त्रण मे रखा जा सकता है। इससे खाद्यान्नों की जमाखोरी पर भी नियंत्रण रखा जा सकता है। कोरोना महामारी के दौरान यह कई परिवारो के लिए जीवनदायी सिद्ध हुई है।

3½

• प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर मे निम्नलिखित अन्तर है -

1 7

आधार	प्रत्यक्ष कर	अप्रत्यक्ष कर
1. अर्थ	ये कर जो आय व संपत्ति पर लगाये जाते है।	ये वस्तुओ व सेवाओ पर लगाये जाते हैं।
2. बोझ	इनका बोझ उसी व्यक्ति पर होता है जिस पर ये आरोपित किये जाते है। अर्थात ये अहस्तांतरणीय प्रकृति के	ये हस्तांतरित प्रकृति के है अर्थात ये उत्पादक पर लगाये जाते है परन्तु उपभोक्ता द्वारा वहन किये जाते है।

3½

Short space ... [illegible]

	किये जाते हैं। अर्थात ये अहस्तांतरणीय प्रकृति के होते हैं।	जाते हैं परन्तु उपभोक्ता द्वारा वहन किये जाते हैं।
3. प्रभाव	इसका प्रभाव अमीरो पर अधिक पड़ता है क्योंकि इसकी दरें प्रगतिशील होती हैं।	इसका प्रभाव सभी उपभोक्ताओं पर समान पड़ता है। क्योंकि ये अनुपातिक होते हैं।
4. उदाहरण	आयकर, निगमकर आदि	जीएसटी, टोल कर आदि।

1 8 अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का गठन 27 दिसम्बर 1945 को विश्व बैंक के साथ हुआ। इसका मुख्यालय वाशिंगटन डीसी में है। इसके सदस्य देश 190 है। इसकी अध्यक्ष क्रिस्टालिना जॉर्जीवा और मुख्य आर्थिक सलाहकार गीता गोपीनाथ है। यह सदस्य देशों को विदेशी विनिमय में सुविधा, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं भुगतान को प्रोत्साहन तथा सदस्य देशों की आर्थिक उन्नति में मदद के लिए अन्तर्राष्ट्रीय तंत्र को ~~मम~~ मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1 9 नवीन लोक प्रशासन की निम्न लिखित विशेषताऐं हैं –

① राजनीति-प्रशासन का द्विभाजन अस्वीकार।

② लोक प्रशासन को कार्योन्मुख के बजाये मानवोन्मुख पर बल।

③ यह सामाजिक ...

(2) लोक प्रशासन को कार्योन्मुख के बजाये मानवोन्मुख पर बल।
(3) यह सामाजिक न्याय तथा समानता के आगम अपनाता है।
(4) स्थितिवाद का विरोध व नवीनता और लोचशीलता पर बल।
(5) ग्राहकोन्मुखी प्रशासन।
(6) सामाजिक संवेदनाओं की समस पर बल।
(7) विकेन्द्रीकरण और प्रत्यायोजन को बढ़ावा।
(8) इसमें अन्तर्विषयी दृष्टिकोण अपनाया गया है।

1 10 संगठन की सफलता अथवा असफलता इसके द्वारा प्राप्त परिणामों से ही ज्ञात की जासकती है। संगठन की सफलता के लिए आवश्यक है कि इसकी रचना कुछ सिद्धान्तों के आधार पर की जाये जो संगठन के अभीष्ट उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम हो। ये सिद्धान्त निम्नलिखित हैं– पदसोपान, उत्तरदायित्व, आदेश की एकता, उद्देश्य, विशिष्टीकरण, अनुरूपता, समन्वय, अधिकार सन्तुलन, लोचशीलता का सिद्धान्त आदि।

3 L महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा का सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से अभिप्रेरित है। महात्मा गांधी जी के अनुसार शिक्षा वह है जो बालक के शरीर, मन, और आत्मा का विकास करे।

गांधी जी ने शिक्षा को 3R और 3H की संज्ञा दी थी। 3R से उनका आशय रीडिंग, राइटिंग, अरिथमेटिक से था, अर्थात अंकों का ज्ञान और 3H से उनका आशय हैण्ड, हेड, हार्ट से था अर्थात शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक का शारीरिक मानसिक और बौद्धिक विकास करे।

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य -

→ शारीरिक विकास → नैतिक व चारित्रिक विकास
→ शारीरिक एवं बौद्धिक विकास → व्यावसायिक विकास
→ व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास → आध्यात्मिक विकास
→ सांस्कृतिक विकास → पाठ्यक्रम

गाँधी जी के अनुसार शिक्षण विधियाँ -

- अनुकरण विधि → बालक अध्यापक के अनुकरण से सीखता है
- क्रिया विधि → हस्तकला, चित्रकला आदि कौशल का विकास
- मौखिक विधि → व्याख्यान, वाद-विवाद से अधिगम।
- श्रवण - मनन - निदिध्यासन → गांधी जी ने इसे सर्वोत्तम विधि माना है इसमे बालक सर्वप्रथम सुनता है फिर चिंतन करता है और फिर क्रिया करता।

शिक्षा के दर्शन के आधारभूत ? सिद्धांत है।

मूलभूत शिक्षा के सम्बंध में गांधी जी का दर्शन -

→ 6 से 15 वर्ष तक के सभी बाल्चों को अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा।

→ मातृभाषा मे शिक्षा।

→ सम्पुर्ण शिक्षा हस्तकला और उद्योगों पर आधारित होनी चाहिए।

गांधी जी दमनात्मक विधि का विरोध किया है और बालक आत्म अभिप्रेरण पर बल दिया। शिक्षक को व्यवसाय सेवा भाव से करना चाहिए, शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्र विधार्थी होना चाहिए आदि गांधी जी के शिक्षा सम्बंधी विचार है जो आज भी प्रासांगिक है और वर्तमान की नई शिक्षा नीति-2020 में परिलक्षित होते है।

6½

8

3 2. नेहरू एक महान राष्ट्रवादी थे, किन्तु उन्होने राष्ट्रवाद का कोई नया सिद्धान्त प्रतिपादित नहीं किया था। उनका राष्ट्रवाद रवीन्द्रनाथ के समन्वयात्मक सार्वभौमवाद से प्रभावित था। उन्हें विवेकानंद और अरविंद के राष्ट्रवाद सम्बंधी धार्मिक दृष्टिकोण के प्रति सहानुभूति न थी। जब जिन्ना ने धर्म के लिए मुस्लिम राष्ट्रीयता की पैरवी की तब नेहरू जी को दुःख हुआ, उन्होने कहा कि " यदि राष्ट्रीयता का आधार धर्म है तो भारत में न केवल दो वरन् तमाम राष्ट्र मौजूद हैं। भारत की राष्ट्रीयता न तो हिन्दू राष्ट्रीयता है न मुस्लिम, वरन् यह विशुद्ध भारतीय है।

नेहरू जी सम्प्रभुता के पक्षधर और साम्राज्यवाद के विरोधी थे। उन्होंने संकीर्ण राष्ट्रीयता को घातक माना है। उन्होने राष्ट्रीयता में मानवता का समावेश किया। उन्होने कहा कि राष्ट्रवाद के नाम पर धर्म, जाति और संस्कृति का सहारा नहीं लेना चाहिए। उन्होने ~~मिस्र~~ मोरक्को, इण्डोनेशिया आदि देशों के आजादी हेतु स्वतंत्रता आंदोलनों का समर्थन किया।

अरब राष्ट्रवाद के समय उन्होने कहा " एक पराधीन

अरब राष्ट्रवाद के समय उन्होंने कहा "एक पराधीन देश के लिए शांति का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि शांति तो स्वतंत्रता के बाद ही स्थापित हो सकती है इसलिए साम्राज्यों को मिटना ही चाहिए। उनका ज़माना अब बीत चुका है।

Good

1½

नेहरू ने राष्ट्रवाद के उदार स्वरूप को ग्रहण किया और ऐसे राष्ट्रवाद को ठुकरा दिया जो अन्तर्राष्ट्रीय शांति में बाधक हो तथा अपने स्वरूप में आक्रामक हो। उनके अनुसार उग्र राष्ट्रवाद से नस्लवाद, राष्ट्रों के प्रति घृणा, साम्राज्यवाद, युद्धवाद आदि बुराइयों का जन्म होता है

---

3 3 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल एक राष्ट्रवादी नेता थे। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के 562 छोटी-छोटी रियासतों का एकीकरण किया इसलिए उन्हें 'भारत का बिस्मार्क' भी कहा जाता है सरदार पटेल के राष्ट्रीय विचारों को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं -

प्रजातंत्र → पटेलजी ने राष्ट्र के लिए प्रजातंत्र को महत्वपूर्ण माना है उन्हे प्रजातंत्र में पूर्ण विश्वास था। उनके अनुसार प्रजातंत्र में ताकत होनी चाहिए जिससे वह अन्याय के खिलाफ लड़ सके। उनका विश्वास था कि प्रजातंत्र की सफलता के लिए अनुशासन अनिवार्य है।

जनमत → उनका विचार था कि राष्ट्र की सरकार को लोक सहमति

जनमत → उनका विचार था कि राष्ट्र की सरकार को लोक सहमति के बिना कोई कार्य नहीं करना चाहिए।
उन्होंने शासकों को जनता का सेवक बताया और लोक कल्याण को सर्वोच्च कर्तव्य माना।

राज्य की आवश्यकता → देशी रियासतों के एकीकरण से उन्होंने जाना कि छोटे राज्य राष्ट्र के विकास में बाधक हैं। भाषायी व भौगोलिक आधार पर गठित ये राज्य देश की एकता और अखण्डता के लिए हानिकारक हैं। उनके अनुसार संघात्मक व्यवस्था में राज्यों का गठन प्रशासनिक सुविधानुसार होना चाहिए।

नागरिकों के कर्तव्य व अधिकार - मजबूत राष्ट्र के लिए आवश्यक है कि भारत के नागरिक जाति-पाति भूलकर स्वयं को केवल भारतीय समझे और भारतीय स्वतंत्रता की रक्षा करें।
संविधान सभा की मौलिक अधिकार समिति के अध्यक्ष सरदार पटेल ने स्वतंत्रता के अधिकार को राष्ट्र के लिए अत्यंत आवश्यक माना है।

दण्ड व्यवस्था - सरदार जी गांधी जी की तरह सत्य, अहिंसा, व्यक्ति की नैतिकता में विश्वास रखते थे। उन्होंने कहा कि मित्रता जितना काम करती है उतना दण्ड नहीं।

राष्ट्र को सशक्त बनाने हेतु सरदार पटेल के सामाजिक विचार -

• स्त्री पुरूष समानता पर बल • विवाह सुधारों पर बल

• स्त्री पुरुष समानता पर बल • विवाह सुधारों पर बल
• अस्पृश्यता का विरोध • वर्गीय समानता
• धार्मिक समानता • आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा व्यवस्था।

7½

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने देश की एकता और अखण्डता के लिए अथक संघर्ष व प्रयास किये अब हमारी जिम्मेदारी है कि हम देश की एकता व अखण्डता को बनाए रखें। एकता का संदेश देने के लिए प्रतिवर्ष पटेल जी की जयंती को (31 दिसंबर) को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है। और विश्व मे एकता का संदेश देती हुई पटेल जी की मूर्ति "स्टेच्यू ऑफ यूनिटी" का निर्माण किया गया।

3 4 स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उदित भारत बेरोजगारी, गरीबी निम्न साक्षरता दर, निम्न आर्थिक सम्वृद्धि दर आदि समस्याओं से ग्रसित था। देश में तीव्र आर्थिक विकास हेतु आर्थिक नियोजन को अपनाया गया। वर्तमान में भारत पीपीपी (क्रय शक्ति समता) के आधार पर भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। साथ ही प्रतिव्यक्ति आय (₹ 92,565) से अधिक हो गई है।

किंतु इसके बावजूद भी वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष अनेक चुनौतियां है जिन्हें निम्न संदर्भों मे समझा जा सकता है –

समक्ष अनेक चुनौतियां हैं जिन्हें निम्न संदर्भों में समझा जा सकता है –

- अत्यधिक आर्थिक विषमता।
- देश में गरीबी का प्रतिशत कम हुआ परन्तु गरीबों की संख्या बढ़ गई।
- कार्यशील जनसंख्या (15-59 वर्ष आयु वर्ग) का प्रतिशत अधिक है परन्तु वह अकुशल है।
- कृषि क्षेत्र सर्वाधिक रोजगार देता है परन्तु इसकी GDP में मात्र 13.5% भागीदारी है।
- बढ़ता राजकोषीय व व्यापार घाटा।
- अत्यधिक जनसंख्या,
- राज्यों में असमान आर्थिक विकास से अलगाव का जन्म।
- भ्रष्टाचार व कालाधन, जमाखोरी, महंगाई, बढ़ता NPA आधार भूत अवसंरचना का पिछड़ापन, तकनीकी पिछड़ापन, तीव्र विकास के साथ पर्यावरण से सामन्जस्य की चुनौती आदि समस्याऐं भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष विद्यमान हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान प्रवृत्तियाँ –

वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था अन्य वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं से प्रतिस्पर्धा एवं सामंजस्य बनाये हुए अपना विकास कर रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था परंपरागत रूप से मिश्रित अर्थव्यवस्था है किंतु वर्तमान में इसमें निम्न प्रवृत्तियां भी दिखती है –

(8)

Good

① उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण

① उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण
② GDP में कृषि क्षेत्र की भागीदारी में कमी व सेवा क्षेत्र में वृद्धि (वर्तमान में 53% भागीदारी)
③ विनिर्माण क्षेत्र को महत्व।
④ ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था।
⑤ विदेशी निवेश हेतु सकारात्मकता।
⑥ मानव संसाधन विकास पर बल।
⑦ समावेशी विकास की ओर प्रयास। आदि।

3 5 विकास प्रशासन सामाजिक व आर्थिक परिवेश में नियोजित विकास हेतु कार्यरत व्यवस्था है। विशिष्ट विशेषताओं से युक्त ...

नियोजित विकास हेतु कार्यरत व्यवस्था है। विशिष्ट विशेषताओं से युक्त विकास प्रशासन तार्किकता तथा जनउपादेयता को महत्व प्रदान करता है। इसकी विशिष्ट विशेषताओं को निम्न बिंदुओं में समझा जा सकता है -

1) **परिवर्तन उन्मुख** - विकास प्रशासन यथास्थितिवाद का विरोध करता है तथा परिवर्तन, सुधार एवं नवाचार का समर्थन करता है।

2) **परिणामोन्मुखी** - विकास प्रशासन लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें नियोजित ढंग से प्राप्त करने का प्रयास करता है।

3) **ग्राहकोन्मुख** - विकास प्रशासन का मुख्य ध्यान लाभार्थियों की ओर रहता है जिनके लिए नीतियां निर्मित एवं संचालित की जाती हैं।

4) **प्रतिबद्धता** - विकास प्रशासन विकास योजनाओं के प्रति पूर्ण प्रतिबद्ध अवस्था में रहता है।

5) **समय अभिमुख** - विकास प्रशासन में समय, स्थान व परिस्थिति को महत्व दिया जाता है। निश्चित समय सीमा में लक्ष्यों की प्राप्ति व कार्य निष्पादन होना आवश्यक समझा जाता है।

6) **जन सहभागिता** → विकास कार्यों की सफलता सामुदायिक सहभागिता पर निर्भर है अतः प्रशासनिक कार्यों में जनता की सहभागिता सुनिश्चित की जाती है।

7) नवाचार - विकास से सम्बंधित विविध समस्याओं के समाधान के लिए विकास प्रशासन का तरीका नये ढांचों, प्रक्रिया, पद्धति और कार्यक्रमों को अपनाने का होता है।

इसके अतिरिक्त नियोजन, प्रगतिशीलता, प्रशासन तंत्र में लोचशीलता, लाभभोगी होना भी विकास प्रशासन की विशेषताऐं है।

7

उत्तर point या flowchart के रूप मे प्रस्तुत करें! marking और अच्छी होगी

लेखन शैली प्रभावशील है